880 P
H 66
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1293/10/81

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 880

20.1

891.431
C361 Foj

10 DEC. 1930

* बन्देमातरम *

ट्रैक्ट नं० २ गान्धी जी का

फोजी ऐलान

अर्थात्

आज़ादी की देवी और

सत्यवती का संदेश

तेरी इस ज़ुल्म की हस्ती को ऐ ज़ालिम मिटा देंगे।
ज़बां से जो निकालेंगे वह करके हम दिखा देंगे॥

सम्पादक—

मोहरचन्द 'मस्त' कँवाली जि० गुड़गांव

एजेन्ट-गिरधारीलाल बुकसेलर खारीबावली देहली।

मूल्य केवल -)

PL. 880

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 880
Date 23.12.71
GOVT. OF INDIA

आज़ादी की देवी

यानी

झांसी की रानी श्रीमती लक्ष्मीबाई का इतिहास

(लेखिका—श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान)

——:o.*:o:——

बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी॥
सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारत में भी आई फिर से नई जवानी थी॥
गुमी हुई आज़ादी की क़ीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी॥
चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी॥ बुं०॥
कानपुर के नाना की मुंह बोली बहिन 'छबीली' थी।
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी॥
नाना के संग पढ़ती थी वह नाना के संग खेली थी।
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी॥
बीर शिवाजी की गाथायें उसको याद जबानी थी॥ बुं०॥
लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार।
देख मराठे पुलकित होते उसके तलवारों के वार॥
नक़ली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार।

सैन्य घेरना दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार ॥
महाराष्ट्र कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी ॥ बुं० ॥
हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झांसी में ।
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झांसी में ॥
राज महल में बजी बधाई खुशियां छाईं झांसी में ।
सुभट-बुन्देलों की बिरदावलि सी वह आई झांसी में ॥
चित्राने अर्जुन को पाया शिव से मिली भवानी थी ॥ बुं० ॥
उदित हुआ सौभाग्य,मुदित महलों में उजियाली छाई ।
किंतु काल-गति चुपके २ काली घटा घेर लाई ॥
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियां कब भाईं ।
रानी बिधवा हुई हाय ! विधि को भी नहीं दया आई ॥
निःसन्तान मरे राजा जी रानी शोक समानी थी ॥ बुं० ॥
बुझा दीप झांसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाय ।
राज्य हड़प करने का उसने यह अवसर अच्छा पाया ॥
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया ।
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झांसी आया ॥
अश्रु-पूर्ण रानी ने देखा झांसी हुई विरानी थी ॥ बुं० ॥
अनुनय विनय नहीं सुनता है, बिकट शासकोंकी माया ।
व्यापारी बन दया चाहता था यह जब भारत आया ॥
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया ॥
राजा और नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया ॥
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महारानी थी ॥ बुं ॥
छीनी राजधानी देहली की लखनऊ छीना बातों बात ।

कैद पेशवा था बिठूर में हुआ नागपुर का भी घात ।।
उदेपुर, तंजोर, सितारा, करनाटक की कौन बिसात ॥
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्मपर अभी हुआ था बज्र निपात ।
बङ्गाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी ॥ बुं० ॥

रानी रोई रनिवासों में बेगम ग़म से थी बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार ।
सरे आम नीलाम छापते थे अंगरेज़ी के अख़बार,
नागपूर के ज़ेवर ले लो लखनऊ के नौलख हार ।
यों परदे की इज़्ज़त परदेशी के हाथ बिकानी थी ॥ बुं० ॥

कुटियों में थी विषम वेदना महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरुषों का अभिमान ।
नाना धुन्दूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रणचण्डी का करदिया प्रकट आव्हान ॥
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी, ॥ बुं० ॥

महलों ने दी आग झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी अन्तरतम से आई थी ।
झांसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी ।
जबलपूर कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी, ॥ बुं० ॥

इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में कई वीर वर आये काम,
नाना धुन्दूपन्त, तांतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम ।
अहमदशाह मौलवी ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम ॥

लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुर्बानी थी, ॥ बुं० ॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झांसी के मैदानों में,
जहां खड़ी हैं लक्ष्मी बाई मर्द बनी मर्दानों में।
लेफ्टिनेन्ट बौकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली हुआ द्वन्द असमानों में॥
ज़खमी होकर बौकर भागा उसे अजब हैरानी थी, ॥ बुंदे० ॥

रानी चढ़ी कालपी आई कर सौ मील निरन्तर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार।
यमुना तट पर अँग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार।
बिजयी रानी आगे चलदी किया ग्वालियर पर अधिकार॥
अँग्रेजों के मित्र सेंधिया ने छोड़ी रजधानी थी, ॥ बुंदे० ॥

विजय मिली पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सन्मुख था उसने मुंहकी खाई थी।
काना और मन्दिरा सखियां रानी के संग आई थी,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी॥
पर पीछे ह्यू रोज आगया, हाय घिरी अब रानी थी ॥ बुं० ॥

तो भी रानी मारकाट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार।
घोड़ा अड़ा नया घोड़ा था, इतने में आगये सवार,,
रानी एक शत्रु बहुतेरे होने लगे वार पर वार॥
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीरगति पानी थी, ॥ बुंदे० ॥

रानी गई सिधार! चिता अब उसकी दिव्य संवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,

अभी उम्र कुल तेइस की थी मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतन्त्रता नारी थी ॥
दिखागई पथ सिखागई हमको जो सीख सिखानी थी ॥बुं०॥
जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी ।
होवे चुप इतिहास लगे सच्चाई को चाहे फांसी,
हो मदमाती विजय मिटादे गोलों से चाहे झांसी ॥
तेरा स्मारक तूही होगी, तूही खुद अमर निशानी थी, ॥ बुं० ॥

बन्देमातरम् नं० २

है वतन के वास्ते अकसीर बन्देमातरम् ।
कौम के खादिम की है जागीर बन्देमातरम् ॥
ज़ालिमों को है उधर, बन्दूक पर अपनी ग़रूर ।
है इधर हम बेकसों का, तीर बन्देमातरम् ॥
कत्ल की हमको न दें, धमकी हमारे सब्र से ।
तेग पर हो जायगी, तहरीर बन्देमातरम् ॥
किस तरह भूलूं इसे मैं, जबकि किस्मत में मेरी ।
लिख चुका है राकिमे, तहरीर बन्देमातरम् ॥
फिक्र क्या जल्लादने गर, क़त्ल पर बांधी कमर ।
रोक देगा दूर से, शमशीर बन्देमातरम् ॥
जुल्मसे गर कर दिया, खामोश मुझको देखना ।
बोल उठेगी मेरी, तसवीर बन्देमातरम् ॥
सर ज़मीं इंगलैण्ड की, हिलजायेगी दोरोज में ।
गर दिखायेगी कभी, तासीर बन्देमातरम् ॥

सन्तरी भी मुज़तरिब थे, जबकि हर झंकार पर।
बोलती थी जेल में, ज़ंजीर बन्देमातरम्॥

वीर जितेन्द्र की भावना नं० ३

फ़ाके करेंगे भूख के सदमे उठायेंगे।
रोटी खराब जेल की हर्गिज़ न खायेंगे॥
दारो रसन से डरके न बुज़दिल कहायेंगे।
मर जायेंगे क़दम को न पीछे हटायेंगे॥
हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
ज़िन्दगानियों के हालको बेहतर बनायेंगे॥
बैलों की तरह घास की सब्ज़ी न खायेंगे।
कूटेंगे न हम मूंज न चक्की चलायेंगे॥
फन्दे बला में फँस के न गरदन झुकायेंगे।
मूछों पै ताव देंगे अकड़ भी दिखायेंगे॥
हम जुल्म सहके जुल्मकी हस्ती मिटायेंगे।
जिन्दगानियों के हालको बेहतर बनायेंगे॥
नंगे रहेंगे धूप की सख्ती उठायेंगे।
लेकिन न तन पै ग़ैर के कपड़े सजायेंगे॥
कुरबानियों को मुल्क का रस्ता दिखायेंगे।
मर करके अपनी क़ौम को ज़िंदा बनायेंगे॥
हम जुल्म सहके जुल्म की हस्ती मिटायेंगे।
जिन्दगानियों के हालको बेहतर बनायेंगे॥

सरफरोशी की तमन्ना नं० ४

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥

रह रवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमां!
हम अभी से क्या बतावें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मकतलमें क़ातिल कहरहा है बार बार।
क्या तमन्नाये शहादत भी किसी के दिल में है॥
ऐ शहीदे मुल्क मिल्लत हम तेरे ऊपर निसार।
अब तेरी हिम्मतकी चर्चा ग़ैरकी महफिल में है॥
अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़।
सिर्फ मिटजाने की हसरत अब दिले 'बिस्मिल' में है॥

ले०-काकोरी शहीद रामप्रसाद बिस्मिल नं० ५

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलामख़ाना।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़माना॥
ख़ूं खौलने लगा है हिन्दोस्तानियों का।
कर देंगे ज़ालिमों का हम बन्द ज़ुल्म ढाना॥
क़ौमी तिरंगे झण्डे पर जां निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहीं ठिकाना॥
परवाह न अब किसे है जेल और दमनकी त्यारी।
इक खेल हो रहा है फांसी पै झूल जाना॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंज़ूर सर कटाना॥

सत्यवती का संदेश जेल जाते हुये नं० ६

भारत की देवियो तुम इतना जरूर करना।
जो काम हमने छेड़ा उस पर भी ध्यान धरना॥
मत समझना यह मन में है कैद सत्यवती की।
लेकिन हमारी जैसी बोहती हैं यह समझना॥१॥
मैं कैद जाते जाते हजारों बना गई हूं।
व चन्द्रवती को मेरे समान प्यार रखना॥२॥
चर्खा चला दो घर घर तज कर विदेशी वस्त्र।
अन्याय की निसासे हरगिज़ नहीं तुम डरना॥३॥
जावे तो प्रान जावे पर आन न गंवावो।
इतना कहन मोहर का बहनो यह दिल में भरना॥४॥

देशी भाइयों को चेतावनी रसिया नं० ७

टेक—अब सुनलो गांधी बाबाने यह दीना हुकम सुनाय॥
त्यागो कपड़ा आप विदेशी खादी से चितलाय।
लंकाशायर मैनचेस्टर का किला जीतलो भाय॥१॥
घर २ में चर्खा चलवावो सूत लेवो कतवाय।
बने जुलाहे ताना बाना फिर आज़ादी आय॥२॥
रुई भारत से नहीं जावे पूनी करो धुनाय।
बहनों बीबी सब ही कातो सूत घना हो जाय॥३॥
मरैं भी तो हो कफन स्वदेशी यह दिल लियो जचाय।
जब से गूज हटी चर्खे की कंगाली गई छाय॥४॥
करे अनीती जो थारे पर उसको लेवो दबाय।
हिल मिल कर सब प्रेम बढ़ावो दीजे द्वेष हटाय॥५॥

नारी बांधे पतली शाड़ी शर्म जरा नहीं खाय ।
बाहर से साराअंग दीखे मुख क्यो लिया छिपाया ॥६॥
शर्म करो तो खद्दर पहनो बालन: दीखन पाय ।
बनकर शेर हनो उस नरको जो थारा धमडिगाय ॥७॥
फैशन से हुवा भारत गारत धर्म कर्म बिशराय ।
आमदनी का नहीं तरींका खर्चा लिया बढ़ाय ॥ ८ ॥
बन कर पाखंडी चंडाल कब तक कहूं जिताय ।
लाखों जन तो भूखे मरते खुद रहे मज़ा उड़ाय ॥ ६ ॥
हिन्दू धर्म पर दोष करे कोई देवो मज़ा चखाय ।
मारो और मरजावो सत्यपर मत दिल में घबराय ॥१०॥
हकूक़ अपने लेने को अब रहा बिजय नंद गाय ।
मोहर चन्द्र है शिष्य जिन्हों का रसिया कहा बनाया जी ११

स्त्रीयों को चेतावनी न० ८

टेक—बहनों खद्दर से प्रेम बढाया करो ।
ज्यादा फैशन पर ना इतराया करो ॥
तज कर सुहागन चूड़ियां क्यों हाथ में बांधी घड़ी ।
ओटो सुगंधी और किलपें हैं यह बालों में पड़ी ॥
धन को हरगिज़ न ऐसे लुटाया करो ॥ १ ॥
पतली साड़ी बांध कर नहीं दिल में हो शर्मावती ।
स्नान जब करती हो तुम तब नंगीसी होजावती ॥
साड़ी देशी से अंग छिपाया करो ॥ २ ॥
कपड़ा विदेशी गर पती बाजार से लावे कहीं ।
कहदो हम रखने न देंगी फिर कभी लाना नहीं ॥
ऐसे कह कर पती समझाया करो ॥ ३ ॥

कंगाल इस फैशन ने भारत करदिया अफसोस है।
छोड़ा घरका काम तुमने न धर्म की होस है॥
कभी घर में भी चर्खा चलाया करो॥ ४॥
छींट मलमल डोरिया मखमल व नर्मा छोड़ दो।
पहनो रंगा खद्दर स्वदेशी उनसे दिल को तोड़ दो॥
घर में देशी सब वस्तू मंगाया करो॥ ५॥
गूंज चर्खे की हटी जब से इस भारत देश में।
नाश सुख सम्पत हूई रहते हो रोज़ क्लेश में॥
ज्ञान बहनों को ऐसा सुनाया करो॥ ६॥
ज्ञान जिन से होवे पैदा वेसी पुस्तक लीजये।
आन पर तुम प्रान देदो कहना मेरा कीजिये॥
मोहर चन्द्र के गानों को गाया करो॥ ७॥

वीर प्रतिज्ञा न० ६

कसली है कमर अब तो कुछ करके दिखा देंगे।
आज़ाद ही हो लेंगे या सर ही कटा देंगे॥
हटने के नहीं पीछे डर के कभी ज़ुल्मों से।
तुम हाथ उठाओगे हम पैर बढ़ा देंगे॥
बे शस्त्र नहीं हैं हम बल है हमें चर्खे का।
चर्खे से जमीं का हम तो चर्ख गुजां देंगे॥
परवाह नहीं कुछ दमकी, गमकी नहीं मातम की।
है जान हथेली पर एक पल में गवां देंगे॥
उफ तक भी जबां से हम हरगिज न निकालेंगे।
तलवार उठाओ तुम हम सर को झुका देंगे॥

सीखा है नया हमने लड़ने का यह तरीका।
चलवाओ गन मशीनें हम सीना अड़ा देंगे॥
दिलवादो हमें फांसी पेलान दे कहते हैं।
खूं से ही शहीदों के हम फौज बना देंगे॥
"मुसाफिर" जो अंडमन के तूने बनाये जालिम।
आज़ाद ही होने पर हम उनको बुला लेंगे॥

राष्ट्रीय झंडा नं० १०

प्राण मित्रो भले ही गंवाना, पर न झण्डे को नीचे गिराना।
तीन रंगा है झन्डा हमारा, बीच चर्खा चमकता सितारा।
शान है यही इज्ज़त हमारी, सिर झुकाती है इसे हिंद सारी।
इस पे सब कुछ खुशी से चढ़ा ना॥ १॥
यह है आज़ाद पन की निशानी, इस के पीछे हैं लाखों कहानी।
ज़िन्दा दिल ही हैं इसको उठाते, मर्द हैं वह जो सिर तक चढ़ाते।
तुम भी सारी मुसीबत उठाना, ॥ २॥
तुम क्या भुले हो जलयान वाला, वोह डायर का इतीहास काला
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, निंव आज़ादी की तब पड़ी थी
याद होगर वोह खुं में नहाना, ॥ ३॥
और अब भी न क्या होरहा है हिंद मरता है जां खो रहा है।
बन रहे गोलियों का निशाना, और जाते हैं नित जेलखाना।
होना आज़द या मिट ही जाना॥ ४॥
बस यह करलो अहद मर मिटेंगे, पर न इस वृत से हम हटेंगे।
कुछ कहो मुल्क आज़ाद होगा, उजड़ा गुलशन यह आबाद होगा
हम गायेंगे मिलकर तराना॥ ५॥

झंडा यह हर किले पर चढ़ेगा, इस का दल रोज़ दूना बढ़ेगा।
तीरो तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे।
सब कहेंगे यह सर है कटाना ॥ ६ ॥
ज्ञान हथियार होंगे हमारे, पर वे तोड़ेंगे इनके दुधारे।
इस में अच्छा हैं अंग्रेज जा यें, लोभ हिन्दी हकूमत का त्यागें॥
चरना बदला है क्या यह ठिकाना, उन से बदलेगा सारा ज़माना
ईश शक्ति दे अब धीर हों हम, टेक रक्खें यह सर्वस्व खो हम।
हम ही क्या कह उठे गा जमाना, दुध देखो न मां का लजाना॥
प्राण चाहे हुकम सिंह गंवाना ॥ ८ ॥

देश भक्त वीर की गर्जना ११

तेरी इस जुल्म की हस्ती को ऐ ज़ालिम मिटा देंगे।
ज़ुबां से जो निकालेंगे वह हम कर के दिखा देंगे॥
भड़क उठेगी जब सिनए सोज़ां की दबू आतिश।
तो हम यक सर्द आह भरकर तुझे ज़ालिम जलादेंगे॥
हमारे आह व नाले को तुम बेसूद मत समझो।
जो हम रोने पै आएंगे तौ एक दरिया बहादेंगे॥
हमारे सामने सख्ती है क्या इन जेलखानों की।
वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे॥
हमारी फ़ाके मस्ती कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बद दुआ देंगे॥
हजारों देश सेवक कौमी परवा ने हैं जिन्दा में।
हम उन के वास्ते सब माल ज़र अपना लुटा देंगे॥
कुछ इस में राज़ था मुद्दत से जो खामोश बैठे थे।

हम अब करने पैं आये हैं तो कुछ करके दिखादेंगे ॥

अगर कुछ भेंट आजादी की देवी हम से मागेगी।

समझ कर हम ज़हे क़िस्मत सब अपने सर चढ़ादेंगे ॥

नहीं मन्जूर अब इज्जत हमें सर माये दारों की।

बना कर शाह क्रांति को सिंहासन पर विठादेंगे ॥

गज़ल १२

मुर्दे भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।

लाज भारत की बचा जायेंगे मरते मरते ॥

हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।

उनका अभिमान घटा जायेंगे मरते मरते ॥

ज़ुल्म करती है बड़ा हिन्द पै नौकरशाही ॥

उसको बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

जेलखानों को भी खुश होके बढ़ावें रोनक़।

एक क्या लाख बन जायेंगे मरते मरते ॥

मातृभूमि के लिये जान निछावर करदें।

सबक़ भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥

हैं तो नाचीज़ मगर जुर्रत इतनी रखते।

हिंद का बन्ध छुड़ा जांयगे मरते मरते ॥

शर्म्मा हरदत्त, भगत सिंह, तिलक गांधीका।

सबको फरमान सुना जायेंगे मरते मरते ॥

गज़ल न० १३

जेल मंदिर हैं हमे फांसी गलेका हार है।

बेड़ियां ही हम गरीबों के गले का हार है ॥

हों जहां गांधी ऋषी वह जेल है या तीर्थ है।

स्वर्ग से बढ़कर हमें तो आज कारागार है ॥

बेंत कोड़े हों कि संगीनें चले या गोलियां।

देश भक्तों को सुमन भी क्रूतों की मार है।।
गर तुझे है तोप या तलवार का ज़ालिम घमंड।
हम असहयोगी हमारा सत्य ही हथियार है।।
कब अहिंसा के बृती करते किसी पर वार हैं।
नास करता ज़ालिमों का खुद ही अत्याचार है।।

मर्ज़ रायबहादुरी का शर्तिया इलाज

प्रिय मित्र-मगडली मुझे बहुतरोज से इच्छा थी कि दुनियां मैं जो रायबहादुरी की नित्यप्रति बीमारी बढ़तीजाती है जिसकी दवा जरूर करनी चाहिये मगर तकदीरी बात थी वैद्यक संहिता या इलाजुल गुर्बा वा डाक्टरी पुस्तकों मैं भी नुस्खा नहीं मिला, इस बीमारी ने और भी बीमारियें पैदा करदी हैं जोके टर और दार के नाम से प्रसिद्ध हैं, आखिर मैंने एक महाशय की कृपासे नुस्खा निकाल ही डाला, वह नुस्खा निम्नलिखित है सेवन करना चाहिये:---तुख्म खुदगर्ज ७ माशे, नमकहरामी ६ माशे, बेईमानी १ तोला, तुख्म चुगुलखोरी १ तोला, तुख्म चापलूसी ३ नग, मक्कारी ४ माशा, रोबदोब ६ माशा, देशद्रोह ८ माशा, पेशबाजी १ तोला।

इन उक्त चीजों को लेकर रिश्वत के खरल में डालकर जी हजूरी के सोटे से खूब रगड़े बाद १ सेर पानी में मिलाकर बे-शरमी की हराडी पर चढ़ावे और उसके नीचे हसरत की आंच जलावे जब उस में दो तीन उबाल आजायें तब तास्सुब की छलनी में छान कर खुदकिस्मती के कटोरेमें रखलें और बिला किसी के रोके टोके ७ रोज तक पिये तो मर्ज रायबहादुरी दूर होगा लेकिन परहेज सख्त हैं, फैशन से दूर रहना होगा मुझे उम्मेद है कि इस नुस्खे को इस्तेमाल करने से बीमारी का नमद भी न रहेगा, मूल्य केवल प्रेम है तिसपर भी शर्त यह है कि यदि मरीज को फायदा न हो तो फौरन से पेश्तर अपने हरजाने की डिगरी नीचे लिखे पते पर हज़रा करा लेवें।

पता: एच-एम-बी-एल-एल-डैम बिलाडी

नारायणदास गुप्त के प्रबन्ध से द्वादश श्रेणी प्रेस देहली में छपी

15